नाटक सामाजिक संप्रेषण की श्रेष्ठतम विधा हैः सतीश पावड़े

कोलकाता, 3 अक्टूबर। नाट्यकला व सिनेमा अध्ययन के प्राध्यापक, सुपरिचित नाट्य

निर्देशक, लेखक, अनुवादक व पत्रकार डा. सतीश पावड़े ने कहा है कि नाटक सामाजिक संप्रेषण की श्रेष्ठतम विधा है। डा. पावड़े आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में नाटक और जनसंचार पर विशेष व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा कि पचास से अधिक नाटकों का निर्देशन करते हुए उन्होंने यह महसूस किया कि जनसंचार के गुणों से परिचित व्यक्ति ही एक सफल नाट्यकर्मी हो सकता है। प्रो. पावड़े ने कहा कि जनसंचार व नाटक में एक अन्योन्याश्रित संबंध है। जो काम आज जनसंचार कर रहा है, वही काम नाटक बहुत पहले से ही करता आ रहा है। व्याख्यान के बाद विद्यार्थियों के सवालों के जवाब में उन्होंने कहा कि पत्रकार होने का उन्हें अपने रंग जीवन में बहुत लाभ मिला।

इस अवसर पर डा. पावड़े का साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डा. सुनील कुमार ने सूत की माला पहनाकर तथा अंगवस्त्रम ओढ़ाकर सम्मान किया। आरंभ में कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. सुनील कुमार ने किया।

Caption

कार्यक्रम में बाएं से डा. कृपाशंकर चौबे, डा. सुनील कुमार और डा. सतीश पावड़े